विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती। –प्रेमचंद

विश्वास का संकट

समाज में जिस तेजी से परस्पर विश्वास का क्षरण हुआ है, उसे देखकर तो यह लगता है कि विश्वास का संकट ही उत्पन्न हो गया है। वैसे तो समाज में कई प्रकार के संकट हैं, किंतु सबके मूल में यदि कोई संकट है, तो वह है विश्वास का संकट। अन्य सभी प्रकार के संकटों से पार पाने के कई प्रकार के उपाय हैं, किंतु विश्वास का संकट एक बार उत्पन्न हो जाए तो उसे दूर करना अत्यंत ही दुष्कर कार्य है। कुछ उदाहरणों से इस स्थिति को समझना उपयुक्त होगा।

सबसे पहले हम पारिवारिक रिश्तों की बात करें। परिवार में पिता और पुत्र के बीच में जो विश्वास पहले था, वैसा आज दिखाई नहीं देता। पिता अपनी संपत्ति अपने जीवनकाल में संतानों में इसलिए विभाजित नहीं करना चाहता कि उसे यह विश्वास नहीं है कि संतानों को संपत्ति मिलने के बाद, वह उनकी देखभाल करेंगे अथवा नहीं? दूसरी ओर संतान यह चाहते हैं कि पिता सारी संपत्ति उन्हीं के नाम पर कर दें ताकि बाद में कहीं उनका विचार बदल न जाए। पति-पत्नी का संबंध पूर्ण विश्वास पर टिका होना चाहिए, किंतु उनमें भी परस्पर विश्वास का अभाव होता जा रहा है। बड़े महानगरों में उच्च शिक्षित युवक-युवतियों तक में विश्वास का संकट इतना अधिक बढ़ गया है कि दोनों एक-दूसरे की जासूसी करने लगे हैं। दोनों यह चाहते हैं कि जब भी उनका जीवनसाथी बाहर जाए तो लाइव लोकेशन, मोबाइल फोन से शेयर कर ले, ताकि वह किससे मिल रहा है, कहां जा रहा है, यह ज्ञात कर सकें। कई बार तो जासूसी करने वाली कंपनियों तक को पत्नी द्वारा यह काम दे दिया जाता है। कितनी विचित्र बात है कि जिनका रिश्ता सात जन्मों का माना गया है, वे ही एक-दूसरे की निगरानी करने में लगे हैं। यह सब परस्पर विश्वास के अभाव का ही परिणाम है, अन्यथा ऐसा करने की आवश्यकता ही क्यों पड़े?

अब हम राजनीतिक क्षेत्र को को ही ले लें। अपने ही दल के विधायकों और सांसदों को किसी रिसोर्ट में ठहराना अथवा बाड़े में बंद कर देना इसलिए आवश्यक मान लिया गया है कि कहीं वह दल बदल करके किसी अन्य के साथ ना चले जाएं। जिस दल के चुनाव चिन्ह पर कोई व्यक्ति चुना जाता है एवं जनता का विश्वास प्राप्त करता है, वही यदि स्वार्थ वश दल बदल कर ले तो यह उस क्षेत्र की जनता के प्रति विश्वास घात ही कहलाएगा। इस प्रकार की घटनाएं पहले से कहीं अधिक होती जा रही हैं। विश्वास बिकने लगा है, बस केवल अच्छी कीमत लगाने वाला होना चाहिए।

जनप्रतिनिधियों पर जनता का विश्वास तो पहले ही बहुत अधिक नहीं था और वह उनके द्वारा किए गए वादों पर अधिक विश्वास नहीं करते थे, किंतु अब तो यह लगभग समाप्त ही होता जा रहा है। राजनीतिक दल, दूसरे दल के नेताओं द्वारा किए गए वादों को केवल जुमला कहकर उनका मजाक तक बनाने लग गए हैं। जो व्यक्ति लाखों लोगों का प्रतिनिधित्व करता हो, यदि वह भी विश्वास पर खरा नहीं उतरे तो फिर समाज और देश का भविष्य क्या होगा, यह विचारणीय है।

एक समय था, जब अखबारों पर बहुत विश्वास किया जाता था। कहा जाता था कि यदि कोई खबर अखबार में छप गई तो वह सही ही होगी। अब तो मीडिया की विश्वसनीयता इतनी कम हो गई है कि लोग यह मान कर चलते हैं कि खबर छपती भी किसी के कहने पर है और छपने से रुकती भी किसी न किसी के कहने पर है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, जहां दृश्य भी साथ में होते हैं, उस पर विश्वास न होने का कोई कारण नहीं होना चाहिए था, किंतु आज 'डीप-फेक' के कारण और तकनीकी विकास के कारण, उसमें भी कई प्रकार के भ्रामक वीडियो बनने लगे हैं। आप टीवी पर जो देख रहे हैं, वह अर्ध सत्य है। आजकल 'पोस्ट-ट्रुथ' का प्रचलन और हुआ है जिसका अर्थ है, एक झूठ को या अर्द्ध सत्य को इस प्रकार से प्रचारित-प्रसारित करें कि लोग उसी को सत्य मान कर अपनी सोच को बना लें अथवा बदल लें। ऐसे समय में, सामान्य नागरिक किस पर विश्वास करे, और किस पर नहीं, यह तय करना बहुत मुश्किल हो गया है। जब सरकारी मीडिया केवल सत्ता पक्ष की बात करने लगा है, तो दूसरा पक्ष प्रस्तुत करने के लिए सोशल मीडिया का उद्भव हुआ और अब कई लोग उस पर अधिक विश्वास करने लगे हैं। कुछ यू-ट्यूब चैनल्स के दर्शकों की संख्या तो लाखों-करोड़ों में है। यह बात भी सत्ता पक्ष को रास नहीं आई है एवं चर्चा है कि सोशल मीडिया को नियंत्रित किया जा सकता है। ट्विटर जिसे आजकल ऍक्स कहा जाता है, के सीईओ एलन मस्क ने कहा कि निर्वाचन आयोग द्वारा ऍक्स की कुछ पोस्ट हटाने के लिए कहा गया। आशा ही की जा सकती है कि सरकार सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगाने जैसे अतिवादी कदमों से बचेगी और मीडिया में जनता के विश्वास को और टूटने से बचाएगी।

नेताओं की विश्वसनीयता आजकल कितनी कम हो गई है, कि यदि कोई व्यक्ति विश्वास तोड़ता है तो उसके लिए और कोई विशेषण लगाने की आवश्यकता नहीं है। केवल इतना ही कह देना पर्याप्त होता है–"क्या नेता जैसी बातें कर रहे हो?"

धर्म गुरुओं पर पहले उनके अनुयायी अत्यधिक विश्वास या यों कहें कि अंधविश्वास तक करते थे। आजकल उनकी कही हुई बात पर लोग विश्वास नहीं करते हैं क्योंकि सामान्यत: जैसा वे कहते हैं वैसा आचरण स्वयं भी नहीं करते। धर्म गुरुओं में विश्वास कम होने का मुख्य कारण धर्मगुरु स्वयं हैं। अब क्योंकि उनकी कथनी और करनी में इतना अंतर हो गया है कि धर्म सभा में जाने पर भी लोगों को डर लगने लगा है। जिस प्रकार का व्यवहार कुछ धर्म गुरुओं द्वारा उनकी अनुयायी महिलाओं के साथ किया गया, उसके कारण आजकल महिलाओं को अकेले में तथाकथित धर्मगुरुओं के पास जाने से मना किया जाने लगा है। ऐसी घटनाओं को सुनकर या देखकर, भला अब कौन धर्म गुरुओं पर प्रथम दृष्टया विश्वास करेगा? विश्वास की बढ़ती कमी का दुष्परिणाम यह हो रहा है कि अच्छे और सद्भावी धर्मगुरु पर भी प्रारंभ में विश्वास नहीं किया जाता है, चाहे वह कितना ही श्रेष्ठ क्यों ना हो? इस घटते विश्वास के कारण अच्छे जीवन मूल्यों को जनता में प्रतिष्ठापित करने के प्रयास को भी चोट पहुंची है।

> **विश्वास करने से कई प्रकार की अनावश्यक काग़ज़ी प्रक्रियाओं में कमी आएगी जिससे लोगों की जिंदगी में परेशानी कम होगी। निष्पक्षता, ईमानदारी और विश्वास के कारण, समाज के सभी वर्गों में परस्पर निर्भरता बढ़ेगी और तब एक और एक मिलकर दो नहीं बल्कि 11 हो जाएंगे। वर्तमान में दुर्भाग्य से, शंका की प्रवृत्ति के कारण, एक और एक मिलकर दो भी नहीं, अपितु शून्य हो जाते हैं।**

ग्राहक और विक्रेता में पहले की तुलना में विश्वास बहुत कम हुआ है। पहले यदि कोई मिठाई विक्रेता कहता था कि उसकी मिठाई शुद्ध घी की बनी हुई है तो खरीददार उसे बिना किसी शंका के, मान लेता था। आजकल तो यह भी विश्वास नहीं होता की मावा असली दूध का बना है अथवा सिंथेटिक दूध का। पर्यटन विभाग में निदेशक के रूप काम करते समय मैंने देखा कि कई विदेशी पर्यटक यहां के दुकानदारों पर विश्वास करके कीमती पत्थर के आभूषण खरीद कर ले जाते थे और बाद में उनके नकली निकलने पर वहां से शिकायती पत्र भेजते थे। इस प्रकार की धोखा-धड़ी से जहां देश की छवि को नुकसान पहुंचता है, वहीं इससे यह भी स्पष्ट होता है कि हमारे देश में विश्वास का संकट कितना बढ़ गया है!

चिकित्सा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। यदि कोई मरीज़ डॉक्टर के पास जाए और वह उसे कुछ टेस्ट या कोई दवाई लिखता है तो यह शंका मरीज के मन में पहले उत्पन्न होती है कि कहीं इस टेस्ट या दवा को लिखने के पीछे कमीशन लेने का भाव तो डॉक्टर के मन में नहीं है, अथवा कोई अनावश्यक टेस्ट तो नहीं लिखे गए हैं। मरीज और डॉक्टर का रिश्ता पूर्ण विश्वास पर टिका होता है। कई बार डॉक्टर को भगवान का दर्जा भी दिया गया है, लेकिन जब इस प्रकार का अविश्वास मरीज और चिकित्सकों के बीच में उत्पन्न हो जाए तो उसे क्या कहा जाएगा? इसी का परिणाम है कि वह एक डॉक्टर पर विश्वास न करके, दो-तीन और चिकित्सकों से राय लेता है। जब किसी डॉक्टर के लिए मरीज का हित सर्वोपरि न रहे और स्वयं का स्वार्थ, प्राथमिक हो जाय तो फिर स्वाभाविक है, ऐसे चिकित्सकों पर विश्वास तो घटेगा ही।

एक समय था, जब परीक्षक पर कोई प्रश्न नहीं उठाता था। विद्यार्थी अपनी परीक्षा देते थे और परिणाम परीक्षक पर छोड़ दिया जाता था। यह बात कभी किसी के मन में नहीं आती थी कि किसी अयोग्य के नंबर बढ़ा कर दे दिए जाएंगे, चाहे वह प्रायोगिक परीक्षा हो, मौखिक परीक्षा हो अथवा लिखित परीक्षा हो। पेपर बनाने वाले अपने परिवार जनों को भी कोई संकेत नहीं देते थे कि परीक्षा में क्या प्रश्न पूछे जाएंगे? आजकल विश्वविद्यालय की या बोर्ड की परीक्षा हो, पर्चे लीक होना आम बात हो गई है। यहां तक कि लोक सेवा आयोग के चयन भी संदेह के घेरे में आ गए हैं। लोक सेवा आयोग के सदस्यों के भ्रष्टाचार में लिप्त होने से जो विश्वास लोगों का सालों से था, उसे बहुत गहरा आघात लगा है।

जन नेताओं और समाज के प्रबुद्ध व्यक्तियों को यह समझना होगा कि विश्वास बहुत मुश्किल से उत्पन्न होता और उसे टूटने में एक क्षण लगता है। एक बार टूटने के बाद दोबारा उसे उत्पन्न करना बहुत दुष्कर कार्य है। हाल ही में एक बड़ी रोचक घटना मेरे साथ हुई। मैं अपनी पत्नी को गांधीनगर रेल्वे स्टेशन पर छोड़ने के लिए गया तो उसी डिब्बे से एक वृद्ध दंपति उतरे जिनके पास सामान अधिक था और पति-पत्नी दोनों को चलने में अत्यंत कठिनाई थी और बड़ी मुश्किल से चल पा रहे थे। उनके लिए सामान उठाकर चलना संभव नहीं था। मैंने उनसे कहा कि वे एक बैग मुझे दे दें ताकि मैं उन्हें बाहर तक पहुंचा सकूं। उन्होंने मुझे झिझकते हुए बैग दिया अवश्य, किन्तु बहुत देर तक वह मुझे इसी शंका की दृष्टि से देखते रहे कि कहीं मैं उनका बैग लेकर चला न जाऊं। इस प्रकार की अवधारणा इसलिए भी बनती है कि कई बार ऐसी घटनाएं आजकल देखने-सुनने में आती हैं। अब क्या हर मददगार को शंका की दृष्टि से देखा जाएगा? अब विश्वास करना एक अपवाद हो गया है और अविश्वास करना सामान्य बात हो गई है।

यह बात सरकार और जनता के बीच में भी लागू हो रही है। सरकार यह मानकर चलती है कि जनता, विश्वास योग्य नहीं है और वह सरकार के नियमों का पालन नहीं करना चाहती है। दूसरी ओर, जनता भी यह मानकर चलती है कि सरकार का काम, आम नागरिक को प्रताड़ित करना और परेशान करना है। महत्वपूर्ण संस्थाओं जैसे– चुनाव आयोग, सीबीआई, सीएजी, इनकम टैक्स, ई डी आदि पर यह विश्वास कम होता जा रहा है कि वे निष्पक्ष रूप से काम करेंगे। बैंक के नोट पर भी सरकार द्वारा लिखा होता है कि वह अंकित राशि धारक को देने का वादा करती है किंतु अचानक सरकार ने नोट बंदी करके एक प्रकार से जनता का विश्वास ही तोड़ा। यदि सरकार नागरिक पर विश्वास करके अपने सारे कानून-कायदे भी विश्वास के आधार पर बनाए, तो जनता का भी विश्वास सरकार में जमेगा। इसका एक सुखद अनुभव मुझे तब हुआ था जब मैं भूमि एवं भवन कर विभाग के निदेशक के रूप में लगभग 30 वर्ष पहले कार्य कर रहा था। इंस्पेक्टर राज को समाप्त करने की दृष्टि से हमने केवल एक निर्णय लिया कि कोई भी भवन मालिक, निर्धारित मापदंड के अनुसार अपनी संपत्ति का मूल्यांकन करके, स्वयं गणना करके देय कर जमा करा दे। विभाग द्वारा उससे किसी प्रकार का प्रश्न नहीं पूछा जाएगा। पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि हमारे इस एक निर्णय से उस विभाग में जहां 20 वर्ष तक कभी राजस्व प्राप्ति का लक्ष्य पूरा नहीं हुआ था, वह न केवल पूरा हुआ बल्कि लक्ष्य से कहीं अधिक कर राशि विभाग को प्राप्त हुई। साथ ही सरकार की छवि में भी सकारात्मक बदलाव हुआ।

पहले यात्री जब ट्रेन में सफर करते थे, तो सहयात्रियों के साथ घर से लाया गया भोजन आपस में बांट कर खा लिया करते थे। आजकल, यदि आप किसी को चाय या कोई खाद्य पदार्थ देने का प्रयास भी करें तो मन में शंका रखते हुए वह लेने से मना ही करेगा। इसके पीछे भी यही अविश्वास है कि कहीं किसी प्रकार का हानिकारक पदार्थ तो खाने में नहीं मिला दिया गया है।

एक बार शक पैदा हो जाता है, उसका कोई इलाज नहीं कर सकता है। हम यह चाहते हैं कि दूसरा हम पर विश्वास करे किंतु हम दूसरे पर विश्वास नहीं करना चाहते हैं। विश्वास की प्रक्रिया की शुरूआत स्वयं से करनी होगी। हम जिसके भी संपर्क में आएँ, उस पर विश्वास करना प्रारंभ करें। आप मान कर चलिए, जितना विश्वास आप करेंगे, उससे दुगना विश्वास दूसरा व्यक्ति आप पर करेगा। परस्पर विश्वास के कारण, समाज में ऐसा माहौल बनेगा जहां सब एक-दूसरे के साथ विश्वास के आधार पर सहयोग करने के लिए तत्पर होंगे। तब ही कथनी और करनी का अंतर भी समाप्त होगा। विश्वास करने से कई प्रकार की अनावश्यक काग़ज़ी प्रक्रियाओं में कमी आएगी जिससे लोगों की जिंदगी में परेशानी कम होगी। निष्पक्षता, ईमानदारी और विश्वास के कारण, समाज के सभी वर्गों में परस्पर निर्भरता बढ़ेगी और तब एक और एक मिलकर दो नहीं बल्कि 11 हो जाएंगे। वर्तमान में दुर्भाग्य से, शंका की प्रवृत्ति के कारण, एक और एक मिलकर दो भी नहीं, अपितु शून्य हो जाते हैं।

आइए, विश्वास आधारित समाज की परिकल्पना को साकार करने हेतु अपना संकल्प लें और भारतीय समाज को आदर्श समाज बनाने की दृष्टि से हम काम करें। तब हम इस गीत के बोल को सार्थक कर पाएंगे–"तुम मुझको विश्वास दो, मैं तुमको विश्वास दूँ....हम मिलकर इस दुनिया को स्वर्ग बनाएँगे....."

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

हनुमान जयंती पर विशेष

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता– रूद्रावतार हनुमान

कलराज मिश्र

हनुमानजी भगवान शिव के रूद्रावतार है। अष्ट सिद्धियां और नो निधियां प्राप्त हनुमान शक्ति एवं साहस के प्रतीक हैं। उनकी आराधना से व्यक्ति अपने भीतर स्वयंमेव ऊर्जा का अनुभव करता है। भारतीय संस्कृति में हनुमान भगवान श्री राम की भक्ति के भी अद्भुत उदाहरण हैं। हमारे यहां पौराणिक कथाओं में आता है कि भगवान श्री राम से हनुमान ने यह वरदान मांगा था कि धरती पर जब तक रामकथा हो तब तक उनका भी जीवन बना रहे। इसीलिए आज भी हनुमान पृथ्वी के जीवंत देवता हैं। उनके स्मरण मात्र से जीवन के बड़े से बड़ा संकट दूर हो जाता है, इसलिए वह संकटमोचक हैं।

संत तुलसीदास जी रचित हनुमान चालीसा की चौपाईयां पढ़ेंगे तो पाएंगे हनुमानजी का पूरा जीवन-चरित्र उसमें समा गया है। हनुमान का पूरा जीवन ही प्रेरणा देने वाला है। कथा आती है कि वह जब छोटे बालक थे तब उन्हें एक दिन जोरों की भूख लगी, हनुमान जी ने सूर्य को फल समझ कर निगल लिया। उस समय सूर्यग्रहण था और राहु सूर्य को ग्रस्त करने के लिए आया था। हनुमान जी का विशाल आकार और उनको सूर्य को निगलते देख कर राहु ने डर कर देवराज इन्द्र से शिकायत की। इन्द्र को ऐरावत पर चढ़कर आते देख पवन कुमार ने उसे बड़ा-सा सफेल फल समझा और उसी को पकड़ने के लिए चले। इस पर इन्द्र ने अपने वज्र से हनुमान जी के मुख पर जोरों से प्रहार किया, जिससे उनकी हनु यानी ठुड्डी टेढ़ी हो गयी और वे पृथ्वी पर गिर पड़े। इससे कुपित होकर हनुमान के पिता वायुदेव ने अपना प्रवाह रोक दिया, जिससे सबका श्वास अवरुद्ध होने लगा। यह देखकर ब्रह्माजी ने हनुमान जी को पूर्ण स्वस्थ कर उन्हें अमरत्व प्रदान किया और अग्नि, जल, वायु से उन्हें अभय प्रदान किया। इस प्रकार हनु के टेढ़ी हो जाने से वे 'हनुमान' कहलाये।

हनुमान माता अंजना के पुत्र हैं। उनके पिता महाराज केसरी हैं। पर वह पवन देव के मानस पुत्र है, इसलिए पवन पुत्र हैं। भगवान श्री राम के परम भक्त हैं, इसलिए रामदूत है। दूत का काम होता है अपने स्वामी का संदेश सुनना-सुनाना। हनुमान जी सारे जगत में अपने स्वामी प्रभु श्री राम का ही संदेश सुनाते हैं। तुलसी रचित रामचरित मानस के सुंदरकांड में हनुमान जी ने हर स्थान पर अपना परिचय अपने नाम के स्थान पर श्री रामदूत के रूप में ही दिया हे।

हनुमान अतुलित बलधाम हैं। उनकी शक्तियों की तुलना किसी और से नहीं हो सकती है। धर्म की रक्षा के लिए उन्हें अमरता का वर मिला। इसलिए कलयुग में भी वह जागृत देव है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, हनुमान हिमालय स्थित गंधमादन पर्वत पर रहते हैं। यह पर्वत अंजनाद्रि के नाम से जाना जाता है, यही हनुमान का जन्म स्थान भी है। बचपन में जब हनुमान जी ने सूर्य को फल समझ कर खाने का प्रयास किया तो समस्त संसार में अंधकार छा गया था। इन्द्र ने उन पर वार किया तो वायुदेव नाराज हुए और चहुंओर प्राणवायु रुक गयी। तब समस्त देवी-देवताओं ने वायुदेव को मनाया और बजरंग बली को दिव्य अस्त्र-शस्त्र भेंद किए। हनुमानजी को कुबेर जी ने गदा प्रदान की। हनुमान जी ने बांए हाथ में गदा धारण की, इसलिए 'वाम हस्त गदा युक्तम' कहे गए। उनकी गदा का नाम है कौमोदकी। इस गदा के एक वार से ही उन्होंने रावण के रथ को तहस-नहस कर दिया था।

हनुमानजी बुद्धि और बल के दाता हैं। भगवान श्री राम ने हनुमान जी को प्रज्ञा, धीर, वीर, राजनीति में निपुण आदि विशेषणों से संबोधित किया है। हनुमानजी बल और बुद्धि से संपन्न हैं। उनको मानसशास्त्र, राजनीति, साहित्व, तत्वज्ञान आदि शास्त्रों का गहन ज्ञान है। बड़ी रोचक कथा है लक्ष्मण मूर्छित होने के समय की। द्रोणगिरी पर्वत से संजीवनी बूटी लेकर जब हनुमान जी लौट रहे थे तब रावण को इस बात का पता चल गया। रावण ने शनिदेव को उनके पीछे लगा दिया। हनुमान जी ने जब अपने बल और बुद्धि से शनि को अपने पैरों के नीचे कुचलकर बांध दिया। शनि बड़ा परेशान हुआ और हार मान ली। कहते हैं तब हनुमान जी ने इस शर्त पर शनि को माफ किया कि कोई भी व्यक्ति शनि से पीड़ित होगा और भगवान श्री राम का जाप करेगा तो वह उसे परेशानी नहीं करेगा। हनुमान इसीलिए संकटमोचक हैं कि वह इसी तरह मनुष्य को हर संकट से मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं।

हनुमान मानव जीवन की प्रेरणा के स्त्रोत हैं। वह यह सीख देते हैं कि कैसे अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण रखते हुए कार्य करें और लक्ष्य प्राप्ति तक विश्राम न करें। उनका जीवन श्री राम के हर आदेश का पालन करते हुए उसे सफल तरीके से सिद्ध करते स्वामी भक्ति और निमित्त मात्र होते कार्य करने का संदेश है। बल और बुद्धि का कैसे समुचित उपयोग किया जाए, यह हनुमान जी के जीवन-चरित से समझा जा सकता है। उन्हें जब जरूरत पड़ी तो उन्होंने अपने आपको छोटे स्वरूप में बदल लिया और सुरसा के मुंह के भीतर जाकर बाहर निकल आए और आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने पूंछ को बढ़ा कर पूरी लंका को भस्म कर दिया। ऐसे बजरंग-बली के जन्मोत्सव पर उन्हें स्मरण करते, उनसे सीख लेते हुए भव सागर की हर बाधा पार करने का प्रयास करें।

–कलराज मिश्र,
राज्यपाल, राजस्थान

संत पीपाजी ने क्षत्रियों को अहिंसा का मार्ग दिखाया

मिश्रीलाल पंवार

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन में उस समय के महान वैष्णव संत जगतगुरु रामानन्दाचार्य जी महाराज का अतुल्य योगदान रहा है। उनके बारह प्रमुख शिष्य थे, जो आज दुनिया भर में अपनी अलग ही पहचान रखते हैं। उन्हीं में एक नाम संत पीपाजी का है। संत पीपा जी गागरोन गढ के राजा थे। उनका नाम प्रताप सिंह था। वे खींची चौहान वंश से थे। भगवती के उपासक थे। परम योद्धा थे। मालवा के मुस्लिम शासकों ने जब गागरोनगढ पर आक्रमण किया तो राजा प्रताप सिंह ने उनकी ऐसी धुनाई की कि उन्होंने बाद में कभी गागरोन गढ की तरफ मुड़ कर नहीं देखा। प्रताप सिंह के शासनकाल में फिर कोई आक्रान्ता गागरोन गढ पर आक्रमण करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। गागरोन गढ नरेश प्रताप सिंह की बारह रानियां थी। सबसे छोटी रानी का नाम पद्मावती था। वे टोडा नरेश डूंगरसिंह की पुत्री थी। बाद में जब प्रताप सिंह ने जगतगुरु रामानंदाचार्य स्वामी से दीक्षा ली आदितो उनका नाम संत पीपा जी हो गया। उनकी पत्नी पद्मावती ने भी रामानन्द स्वामी से दीक्षा लेकर पति के साथ संन्यास ग्रहण कर लिया था। सन्यास पथ पर उनका नाम पद्मावती से सीता सहचरी हो गया। सन्यास लेने के बाद पति पत्नी ने भारतभर में भ्रमण कर भटके लोगों को धर्म की रात दिखाई। नाभा गोस्वामी के अमर ग्रन्थ श्री भक्तमाल में संत पीपाजी एवं उनकी पत्नी सीता सहचरी के बारे में काफी विस्तार से लिखा गया है। द्वारका में समुन्द्र में भगवान श्री कृष्ण के साक्षात दर्शन करना, गुजरात के ही घने जंगल में सिंह को उपदेश देना, जैसे अनेक चमत्कारी प्रसंग धार्मिक ग्रंथों में भरे पड़े हैं। गुजरात से भ्रमण करते संत पीपा जी एवं उनकी धर्मपत्नी सीता सहचरी ने राजस्थान में प्रवेश किया। यहां अनेक नगरों का भ्रमण किया। उनका मारवाड़ आगमन हुआ। मारवाड़ में जगह जगह भ्रमण करते अनेक लोगों में भक्ति एवं परोपकार की दिव्य जोत जलाई।

इनके उपदेशों से प्रभावित होकर अनेक राजपूत परिवारों में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया। बड़ी संख्या में लोगों ने इनसे दीक्षा लेकर क्षत्रिय कर्म से मुंह मोड़ लिया। बाद में इन राजपूत परिवारों के सामने जीवन यापन की समस्या खड़ी हो गई। तब संत पीपा जी ने इन्हें शीवनकला अपनाकर जीवन यापन का आदेश दिया। मारवाड़ के अनेक राजपूत परिवारों ने हिंसा का मार्ग छोड़कर पीपाजी से दीक्षा ले ली और परिवार का पालण पोषण करने के लिए सिलाई कर्म को अंगीकार कर लिया। मारवाड़ में पीपा जी ने लोगों पर गहरा प्रभाव छोड़ा था। यही कारण है कि आज पीपाजी के अनुयायियों की संख्या मारवाड़ में सबसे ज्यादा है। हालांकि इतिहासकारों ने उनके मारवाड़ प्रवास पर कुछ नहीं लिखा। मगर मारवाड़ में उनके अनुयायियों की संख्या देश में सर्वाधिक है। इसलिए यह प्रमाणित हो जाता है कि संत पीपा जी का मारवाड़ आगमन हुआ था। जहां वे लंबे समय तक रहे और क्षित्रय समाज के बड़े वर्ग को शीवन कला से जोड़ा। उसी वर्ग के लोग आज पीपा क्षित्रय समाज के नाम से पूरे विश्व में पहचाने जाते है।

भारतवर्ष के विभिन्न नगरों का भ्रमण करते सीता सहचरी समेत श्री पीपाजी टोडारायसिंह ग्राम आये और गाँव से बाहर कुटी बनाकर रहने लगे। एक दिन संत पीपा जी स्नान करने के लिये गये तो वहाँ एकाएक मुहरों से भरे हुए मटके दिखायी पड़े। उस मिले हुए धन को देखकर वे अपनी कुटिया पर चले आये। रात में सीता सहचरी जी से बताया कि उस सरोवर पर स्वर्णमुद्राओं से भरे मटके पड़े थे। मै छोड़ आया हूँ। सुनकर सीता सहचरी ने कहा, अब आप उस तालाब पर स्नान करने मत जाना। संयोगवश चोरी करने की इच्छा से वहीं कुटिया के पास छिपे हुए चोरों ने यह बात सुन ली। वे तुरंत उसी सरोवर पर गये और जाकर देखा तो उन पात्रों मे साँप-बिच्छु भरे हुए थे। चोरों ने समझा कि वे हमे साँपों से कटवाकर मरवा डालने के लिये ही ऐसी बातचीत आपस मे कर रहे थे। बदला लेने की भावना से उन चोरों ने मुहर भरे सभी मटके उठाए और श्री पीपाजी की कुटी में पटककर भाग गये। जब श्री पीपाजी ने देखा तो सोचने लगे कि सुना तो था कि भगवान जब भी देता है, छप्पर फाड़कर देता है। आज तो भगवान ने छप्पर फाड़कर धन दे दिया है। उन्होंने भगवान का प्रसाद मान उस धन को अपने पास रख लिया और जी भर कर साधु संतों की सेवा में जुट गए। श्रीपीपाजी उस धन से साधु महात्माओं को निमन्त्रण देकर बडे-बडे विशाल भण्डारे करने लगे। असंख्य सन्त प्रसाद पाने लगे। कहते हैं इस प्रकार संत महात्माओं को खिला-पिलाकर सम्पूर्ण धन को श्री पीपा जी ने तीन दिन में समाप्त कर दिया।

–राजा सूर्यसेनमल का संत पीपा जी का शिष्य बनना

आपकी इस विशाल कीर्ति को टोंडारायसिंह नगर के राजा सूर्यसेनमल ने सुना तो वह दर्शन करने के लिये आये और दर्शन करके बहुत प्रसन्न हुए। फिर बडी नम्रता से राजा ने प्रार्थना की और कहा– आप मुझे शिष्य बना लीजिये। जैसी आज्ञा मुझे देंगे मैं वही करूँगा। तब पीपाजी ने राजा की परीक्षा लेकर उसको मन्त्र दीक्षा दी। फिर सम्पत्ति और रानियों को लौटाकर कहा कि सम्पूर्ण राज्य तथा ये रानियां आज से अब भगवान की शरणागत है, इनमें अब ममता न रखना। रानियों को आज्ञा दी कि गरीबों, सन्तो व महात्माओं की सेवा करना। पीपा जी ने अपना अंतिम समय टोंक के टोडारायसिंह नगर में ही बिताया था। और वहीं सीता सहचरी ने संत पीपा जी का साथ छोड़कर भगवान के दिव्य धाम को प्रस्थान किया। कुछ समय पश्चात संत पीपा जी गागरोन नगर आ गए। उनका शेष जीवन एकान्तवास में ही गुजारा। चैत्र माह की कृष्ण पक्ष नवमी को संत पीपा जी भी नश्वर संसार को छोड़कर देवलोक को प्रस्थान कर गए। टोडारायसिंह नगर में आज भी पीपाजी को गुफ़ा के दर्शनार्थ लोग पहुंचते हैं। उनकी गुफा आज भी गागरोन किले के पास काली सिंध और आंहू नदियों के संगम स्थित है। उनके आज भारतवर्ष में अनेक मन्दिर बने हुए हैं। उनके अनुयायियों की संख्या आज लाखों में है। चैत्रीय पूर्णिमा को इनके अनुयाई देश-विदेश में इनकी जयन्ती धूमधाम से मनाते हैं। गुरु नानक देव इनकी रचनाओं से बहुत प्रभावित थे। गुरु नानक देव ने ही इनकी वाणियों को गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया।

–मिश्रीलाल पंवार, जोधपुर

पर्यावरण संरक्षण, धरती बचाओ का संदेश दे रहे प्रोफेसर व छात्र

बीकानेर, (निसं)। ग्लोबल वार्मिंग और प्रदूषण से धरती को नहीं बचाया गया तो आने वाली पीढ़ियां इसका खमियाजा भुगतेंगी और हमको कोसेंगी। ऐसा न हो इसलिए मांगीलाल बागड़ी राजकीय महाविद्यालय में पर्यावरण बचाने के लिए प्रोफेसर, कर्मचारी और छात्र सप्ताह में शनिवार को साइकिल से आते हैं। इसमें कुछ पैदल कॉलेज आते हैं तो कुछ साइकिल से दूरी नापते हैं। इतना ही नहीं, शनिवार को बाहर से आने वाले विजिटर्स एवं अभिभावकों के लिए भी कॉलेज परिसर में वाहन प्रवेश प्रतिबंधित रहता है। उनको भी वाहन कॉलेज परिसर से बाहर ही छोड़ना पड़ता है। इसके लिए कॉलेज में समय-समय पर पर्यावरण संरक्षण, धरती बचाओ, पौधरोपण आदि कार्यक्रमों से लोगों को जागरूक किया जाता है।

पर्यावरण प्रेमियों का कहना है कि पर्यावरण प्रदूषण से मौसम लगातार बदल रहा है। कहीं तेज गर्मी तो कहीं बारिश का प्रकोप। अफसोस कि प्रतिवर्ष विश्व पृथ्वी दिवस और विश्व प्रकृति प्रतिरक्षण दिवस महज कागजों में ही सिमट कर रह जाते हैं। लोगों में जागरूकता का अभाव इसका बड़ा कारण है। कॉलेज में शनिवार को डेढ़ दर्जन से अधिक सहायक आचार्य व प्रोफेसर, अशैक्षणिक कर्मचारी और सैकड़ों विद्यार्थी वाहन का मोह का त्याग साइकिल से आते हैं। प्रोफेसरों को देखकर छात्र और कर्मचारी भी ऐसा करने को प्रेरित हुए। इससे पर्यावरण संरक्षण की मुहिम को बढ़ावा मिल रहा है। एमएलबी कॉलेज, नोखा के प्राचार्य डॉ.एस.एन. राजपुरोहित कहते हैं कि पर्यावरण को सुरक्षित करना किसी अकेले के बस की बात नहीं है। इसके लिए सामूहिक प्रयास जरूरी हैं। बड़े स्तर पर पौधरोपण अभियान चलाना होगा। वायु प्रदूषण को कम करने के लिए साइकिल को बढ़ावा देना होगा। सभी कॉलेजों ऐसी ही व्यवस्था हो तो बहुत कुछ बदल सकता है।

जेईई-मेन : एन.टी.ए. द्वारा फाइनल आंसर की जारी

कोटा, (निसं)। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की ओर से जेईई-मेन अप्रैल की फाइनल आंसर की जारी कर दी गई। प्रोविजनल आंसर की पर आपत्तियों के बाद जारी की गई फाइनल आंसर-की में 11 जवाबों में बदलाव किया गया है। इसमें 4 ड्रॉप किए गए हैं तथा 7 सवालों के जवाब बदले गए हैं। एक जवाब गुजराती भाषा में बदला गया है।

एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट के निदेशक डॉ.बृजेश माहेश्वरी ने बताया कि एलन के स्टूडेंट्स ने एक्सपर्ट एडवाईज के बाद जिन 15 जवाबों पर आपत्ति दर्ज करवाई थी, इसमें से 6 में बदलाव किया गया है। एनटीए की ओर से किए गए 11 जवाबों के बदलावों में मैथेमेटिक्स के 6 जवाबों में बदलाव किए गए हैं, इनमें 4 जवाबों को ड्रॉप किया गया है। मैथ्स के ही 1 जवाब को गुजराती भाषा में बदलाव किया गया है। कैमेस्ट्री के 5 जवाबों में बदलाव किए गए हैं।

तिथियों के अनुसार हुए बदलावों की बात करें तो 4 अप्रैल को हुई परीक्षा में 4 जवाबों में बदलाव किए गए, इसमें पहली शिफ्ट के 3 तथा 1 दूसरी शिफ्ट का जवाब था। वहीं 5 अप्रैल पहली पारी का 1 जवाब, 6 अप्रैल को 4 जवाब, जिसमें 3 पहली शिफ्ट तथा 1 दूसरी शिफ्ट, 8 अप्रैल को 1 सवाल प्रथम शिफ्ट तथा 9 अप्रैल को पहली पारी के एक जवाब में बदलाव किया गया है।

राशिफल मंगलवार 23 अप्रेल, 2024

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र रात्रि 10:36 तक, वज्र योग रात्रि 4:56 तक, विष्टि करण सांय 4:56 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 9:19 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कुम्भ, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से रात्रि 10:32 तक है। भद्रा सांय 4:22 तक रहेगी। मंगल मीन राशि में प्रात: 8:33 पर प्रवेश करेगा। आज चैत्री पूर्णिमा, सत्य पूर्णिमा व्रत, मन्वादि है। आज बलि हनुमान जन्मोत्सव, सर्वदेव दमनोत्सव है। आज से वैशाख स्नान आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:11 से 10:44 तक, लाभ-अमृत 10:44 से 2:02 तक, शुभ 3:38 से 5:15 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:59, सूर्यास्त 6:51

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष

मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय दूर होगा। दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह

व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

कन्या

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

तुला

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन में बना हुआ असंतोष दूर होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यावसायिक और अन्य महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

वृश्चिक

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और बाहर जाना पड़ सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

धनु

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा है। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

कुंभ

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

मीन

चन्द्रमा अष्टम भाव में है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आर्थिक परेशानी अभी बनी रहेगी।